13

समूह और नेतृत्व

समूह प्रक्रिया का वर्णन करने का उद्देश्य है आप लोगों को उस प्रक्रिया से परिचित कराना जिसमें व्यक्तिगत स्तर पर एक–दूसरे से अन्तःक्रिया करते हैं। समूह के महत्व का अनुभव हमें सदैव हमारे सामाजिक–जीवन में नित्यप्रति की भूमिका निभाते हुए होता है। हम 'समूह' शब्द का प्रयोग अलग–अलग सन्दर्भ जैसे खेल, राजनीतिक पार्टी, किसी भी कार्य को करने वाली टीम, किसी भी कार्यक्रम का निर्णय लेने वाले समूह की सदस्यता आदि के लिए करते हैं। हम व्यक्तिगत रूप से अलग–अलग जन्म लेते हैं तथा सामाजिकता की दृष्टि से विभिन्न समूहों के सदस्य बनते हैं। अपने कार्यों की पूर्ति के लिए हम समूह के सदस्य बनते हैं। यह पाठ आपको समूहों के कार्य समझाने मे सहायक सिद्ध होगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आपः

- अपने जीवन में समूह का महत्व समझेंगे;
- समूह की विशेषताओं को पहचानेंगे;
- समूह गतिशीतला किस रूप में संचालित होती है जान सकेंगे;
- समूह का हमारे कार्य सम्पादन पर प्रभाव समझ सकंगे; और
- औपचारिक व अनौपचारिक समूह में अंतर कर सकेंगे।

13.1 हमारे जीवन में समूह का महत्व

क्या मनुष्य का जीवन समूह के बिना सम्भव है? क्या बिना किसी समूह के सदस्य बने हम अपनी जरूरतों, अपेक्षाओं, भावनाओं, चुनौतियों को सन्तुष्ट कर सकते हैं? नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि समूह ही किसी भी सामज का बुनियादी घटक है। जिस क्षण हम इस संसार में जन्म

लेते हैं तुरन्त ही समूह का हिस्सा बन जाते हैं जो हमारा परिवार होता है। किसी के लिए भी यह महत्वपूर्ण है कि वह किसी परिवार का सदस्य हो जो उसकी बुनियादी जरूरतों को पूरा करे और सामाजिक संसार में जीवन जीने में सहायता प्रदान करे। प्रत्येक समूह विश्व को एक सामान्य दृष्टि से देखता है और जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है वह बच्चा समूह का एक योग्य सदस्य बनने के लिए वह सब कुछ सीखता है जिसकी उससे अपेक्षा की जाती है। जल्दी ही वह किशोर बच्चा आत्म की समझ अर्जित कर लेता है और व्यक्तित्व का विकास करता है। परविार जैसे समूह अपने समाज की संस्कृति को सामाजिकता की प्रक्रिया से संवाहित करने में सहायता करते हैं। समूह हमें विचार और व्यवहार से जुड़ा ज्ञान भी देते हैं। अगर कोई किसी खेल टीम क्रिकेट या फुटबॉल का सदस्य है तो हर सदस्य को इसके नियमों और कानूनो को मानना होता है।

हमारे जीवन के आरम्भिक वर्षों में परिवार हमारी सहायता करते हैं, फिर जब हम स्कूल और कॉलेज जाते हैं वहां हमें कई सामाजिक, शैक्षिक व व्यावसायिक समूहों की सहायता प्राप्त होती है। हम अलग–अलग समूह के सदस्य बन जाते हैं, जैसे राजनीतिक, धार्मिक, खेल, संगीत, सांस्कृतिक व जातीय समूह जो हमें हमारी जरूरतों व लक्ष्यों को हासिल करने के अवसर प्रदान करते हैं। इस तरह के समूह हमारे जीवन को और अर्थपूर्ण व आरामदायक बनाने में सहायक होते हैं। हम सबसे पृथक होकर ना ही जी सके हैं और ना ही तरक्की कर सकते हैं। क्योंकि सभी घटनाएं हमें यह बताती हैं कि समूह ही हमें हमारी सामाजिक व भावनात्मक जरूरतें पूरी करने के अवसर देता है। जिसमें पहचान, सम्बद्धता, सुरक्षा, प्रतिष्ठा, समानता की समझ और स्तर आते हैं। वास्तव में समूह मनुष्य जीवन का केन्द्र है।

पाठगत प्रश्न 13.1

1. लोग समूह का हिस्सा क्यों बनते हैं? जिन समूहों के आप सदस्य हैं उनकी सूची बनाइए।

13.2 समूह की विशेषतायें

समूह उन लोगों का संगठन होता है जो किसी एक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु, किसी एक नेता के अन्तर्गत कार्य करते हैं। धार्मिक समूह, जाति समूह, बिजनेस व खेल के सामुदायिक समूहों की एक जैसी विशेषतायें व सामाजिक ढांचा है।

समूह की विशेषतायें इस प्रकार हैं:

- सभी सदस्य अपने आपको समूह के सदस्यों की तरह परिभाषित करते हैं और 'हम की भावना' अर्थात एक दूसरे के लिए शक्तिशाली मनोवैज्ञानिक भावना होती है। क्या आपका

ऐसा दोस्तों का कोई समूह है जिनसे आपको प्रेम है? क्या आप एक दूसरे को अपने रोजना के जीवन में सहायता करते हैं?

- समूह के सदस्य अक्सर अन्तःक्रिया में संलग्न रहते हैं और समूह बहुत जल्दी एक–दूसरे के स्वभाव को प्रभावित करते हैं। क्या आप अक्सर अपने दोस्तों से मिलते हैं? इससे आपको यह जानने में सहायता होती है कि आपका समूह अपने लक्ष्य की तरफ कितना आगे बढ़ रहा है।
- समूह के सदस्य सामान्य मानकों, रुचियों व मूल्यों को आपस में बांटते हैं। यह एक दूसरे पर निर्भर करते हैं व अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक दूसरे के प्रति विश्वसनीय होते हैं।
- समूह के हर सदस्य को नियम व कानूनों की जानकारी होती है जो अनुशासन और व्यवस्था बनाए रखने में सहायक होती है। क्या आपकी मां आपको धीरे बोलने के लिए कहती है, जब आपके बड़े भाई परीक्षा की तैयारी कर रहे होते हैं? या भोजन के बाद बरतन साफ करने में मदद करने के लिए कहती है?
- समूह–आकार में भिन्न हो सकते हैं वे छोटे–बड़े हो सकते हैं। एक परिवार चार सदस्यों का हो सकता है या पारम्परिक संयुक्त परिवार में 50 से अधिक सदस्य भी हो सकते हैं। एक राजनीतिक पार्टी 100 सदस्य की भी हो सकती है और कुछ एक–हजारों की भी।

पाठगत प्रश्न 13.2

1. क्या यह किसी समूह के उदाहरण हैं:

   क. सड़क पार करते हुए लोग।

   ख. धर्म के लिए लोगों को इकट्ठा होना।

   ग. बस स्टॉप पर खड़े लोग।

   घ. जन्मदिन की पार्टी।

   च. राजनीतिक मंडली।

2. समूह की महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन करें।

13.3 समूह गतिविज्ञान

किसी भी समूह के एक सदस्य के व्यवहार द्वारा दूसरे सदस्य के व्यवहार को प्रभावित करने की

प्रक्रिया को समूह गतिविज्ञान कहते हैं। समूह गतिविज्ञान को व्यक्ति का व्यक्तित्व, सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक परंपरा जैसे घटक प्रभावित कर सकते हैं। समूह गतिविज्ञान भिन्न समूह–स्थितियों में अलग–अलग प्रकार का होता है।

संगतता

संगतता विशेष रूप से एक जैसे दृष्टिकोण को उल्लिखित करती है, जो समूह या समुदाय के सभी सदस्यों को बांध कर रखती है। किसी भी बाहरी खतरे के समय सभी लोगों में एकजुट होकर लड़ने की ताकत होती है। युद्ध के समय में लोगों में एकता की यही भावना होती है क्योंकि पूरा समूह एक जैसे खतरे का सामना कर रहा होता है। उदाहरण के रूप में जब 26–11–2008 को मुम्बई के ताज होटल पर आतंकियों ने हमला किया था, उस समय पूरी मुम्बई के लोग अपने क्षेत्रीय, भाषा और सामुदायिक मतभेदों को भुलाकर एकजुट हो गए थे।

सहमति

समूह की प्रक्रिया का उल्लेख करने के लिए सहमति की धारणा को समझना बहुत आवश्यक है। दूसरों के व्यवहार से हमारे विश्वास बदलने के कारण हमारा व्यवहार बदल जाता है यह सहमति को प्रभावित करता है। सहमति दो प्रकार की हो सकती है। कई बार हम विश्वास किये बिना दूसरों के अनुरूप हो जाते हैं। इस बाह्य सहमति को अनुपालन कहते हैं। यदि हमारा अनुपालन एक आदेश पर एक निर्देशन के अनुसार है तो इसे आज्ञापालन कहते हैं। निष्कपट आन्तरिक सहमति एक प्रक्रिया है जब हम वास्तव में राजी होते हैं, तो यह स्वीकृति कहलाती है। उदाहरण के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि प्रातः सैर करना स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद है और हम वैसा करना प्रारंभ कर देते हैं।

पाठगत प्रश्न 13.3

1. समूह गतिविज्ञान की प्रक्रिया क्या है?

2. संगतता एवं सहमति को उदाहरण सहित समझाइये।

13.4 'हममें' और 'उनके' बीच अन्तर

क्या आप अपने सामाजिक संसार में अन्य समवयस्कों की तुलना में अपने दोस्तों को अधिक पसन्द नहीं करते हैं? और यदि आप खेलों के प्रशंसक है तो बाहरी टीम के बजाय अपने घर की टीम की प्रशंसा नहीं करते हैं? जी हां, अपने समूह के प्रति हमारा व्यवहार सकारात्मक होता

है। मनुष्य में यह स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि वह समान पहचान के आधार पर समूह का निर्माण करते हैं। इसलिए अधिकतर हम लोग समूह के रूप में ही पहचाने जाते हैं, साथ ही साथ दूसरों का मूल्यांकन करने के लिए भी हम समूह भावना का ही प्रयोग करते हैं। उदाहरण 'यह सब एक जैसे हैं'। 'हम' और 'उनमें' तुलना करने के लिए भी इस समूह भावाना का ही प्रयोग किया जाता है। उदाहरणतः 'वे सब हमसे कितने अलग हैं'। इस प्रकार की सामाजिक वर्गता, पूर्वाग्रह, रुढ़िगत विचार व भेदभाव से सम्बन्धित होती है। जब हम किसी समूह को नकारात्मक व्यवहार से जोड़ते हैं और 'अपने' और 'उनमें' तुलना करते हैं। ऐसे में हम समूह को अलग करने के लिए रेखा खींचने लगते हैं। इस तरह के प्रयास में हम दूसरे समूह को अपने से कम समझने लगते हैं। जिनके लिए हमारे मस्तिष्क में पूर्वाग्रह होते हैं उनके प्रति हिंसा और हानिकर कार्य आम होते हैं।

हम लोगों को उनकी एक–जैसी विशेषताओं के आधार पर श्रेणियों में बांटते हैं। जो स्वाभाविक रूप से लिंग, उम्र और जाति के आधार पर होता है। हम लोगों को 'हम' और 'वो' की श्रेणी में क्यों विभाजित करते हैं? हम लोगों को इसलिए विभाजित करते हैं क्योंकि इससे लोगों से व्यवहार करने में आसानी होती हे। विभाजन प्रक्रिया में अनुकूल कार्य होते हैं। व्यक्तिगत रूप से हर व्यक्ति को अलग–अलग उत्तर देना एक भारी–भरकम कार्य होता है। लेकिन जब कभी हमारे पास अधिक समय और जानकारी हो तो हम व्यक्ति या समूह दोनों को बिल्कुल सही रूप से समझ पाते हैं।

पाठगत प्रश्न 13.4

1. 'हम' और 'उनमें' महत्वपूर्ण अन्तर का वर्णन करें।

कार्य निष्पादन पर समूह का प्रभाव

किसी के भी कार्य निष्पादन पर समूह के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ते हैं। ऐसी ही कुछ महत्वपूर्ण धारणाएं हैं जो हमें समूह का सदस्य बनने के बाद उससे पड़ने वाले प्रभाव को समझने में सहायक होती हैं।

सामाजिक सुगमता

हम कभी–कभी लोगों की उपस्थिति मात्र से भी प्रभावित होते हैं। केवल उपस्थिति का अर्थ उन लोगों से है जो एक दूसरे से मुकाबला नहीं करते लेकिन निष्क्रिय दर्शक या साथी कलाकारों की तरह उपस्थित होते हैं। क्या हमारी खाने, खेलने जैसी सामान्य क्रियायें लोगों की उपस्थिति मात्र से प्रभावित होती हैं? हम रोजाना के जीवन में इस तरह के बदलाव अपने व्यवहार में देख

सकते हैं। यह देखा जाना है कि पार्क में साइकिल चलाने वाले, या जागिंग करने वाले लोगों की अकेले करने की तुलना में एक साथ भागने दौड़ने पर उनकी रफ्तार तेज होती है।

सामाजिक उपेक्षा

सामाजिक उपेक्षा समूह के लोगों की ऐसी प्रवृत्ति है कि एक समान लक्ष्य होने पर वे कम प्रयास करते हैं। जब वे एकता में ताकत है की सामान्य धारणा के विपरीत व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होते हैं। ऐसे में जब पुरस्कार एक जैसा बंटना हो तब कार्य कम चुनौतीपूर्ण, कम आकर्षक व कम अनुभवी हो जाता है। लेकिन जब सदस्यों की पहचान समूह की तरह होती है और कार्य आकर्षक होता है, तब समूह के सदस्य कम समय नष्ट करते हैं।

पाठगत प्रश्न 13.5

1. 'सामाजिक सुगमता' शब्द की व्याख्या करें।

2. सामाजिक शब्द का वर्णन करें।

सामाजिक सुगमता ऐसी प्रक्रिया है जिसमें लोग समूह में ऊपर उठते हैं और उत्तम कार्य सम्पादन की ओर अग्रसर होते हैं। सामाजिक उपेक्षा का अर्थ है जिम्मेदारियों का बंटा होना है। इसका अर्थ है कि समूह का हर सदस्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रयास नहीं करता। क्या आपने कभी रस्सी से खींचने वाला खेल खेला है? क्या आपने यह ध्यान दिया है कि जिन्होंने रस्सी आगे से पकड़ी है वह रस्सी खींचने के लिए अधिक जोर लगाते हैं और जो लोग बिल्कुल पीछे होते हैं उन्होंने केवल रस्सी पकड़ी हुई होती है। हां, जहाँ किसी के कार्यों का मूल्यांकन न हो अथवा पुरस्कृत न किया जाय वहां सामाजिक उपेक्षा सामान्य बात है।

समूह का आकार

समूह का आकार जितना बड़ा होगा, उतना ही उस समूह के सदस्य व्यक्तिगत–जागरूकता को खो देते हैं और उत्तेजित स्थिति में भीड़ द्वारा लूटना, जलाना और जान से मारने जैसे अत्याचार किये जा सकते हैं। ऐसी उत्तेजित भीड़ अपने समूह के सदस्यों का यह विश्वास दिलाती है कि उन्हें सताया नहीं जाएगा, वे उस कार्य को समूह का कार्य मानते हैं।

समूह का ध्रुवीयकरण

जब भी समूह को निर्णय लेना होता है, उसके सभी सदस्य मिलते हैं। ऐसा देखा जता है कि जब भी चर्चा चल रही होती है, तब समूह के निर्णय को अत्यधिक जाखिम भरा बनाने की उत्तेजना होती है। समूह चर्चा के समय जब कोई किसी एक विषय पर अपनी सोच बना लेता है, ऐसे में किसी एक के विचारों का समर्थन करने से ही हमें आपने विश्वास व मतों की वैधता को जानने में सहायता मिलती है। कम जोखिम से अत्यधिक जोखिम तक पहुंचाने की स्थिति को ही समूह का ध्रुवीयकरण कहा जाता है। ऐसा इसलिए होता है ताकि समूह के सदस्यों को नयी जानकारी प्राप्त हो और अधिक अच्छे तर्क मिल सकें।

समूह चिन्तन

समूह चिन्तन का तात्पर्य समूह द्वारा अर्थ को तोड़–मोड़कर प्रस्तुत करने से है जिसके कारण सभी विकल्पों पर वस्तुगत रूप से विचार कर पाना संभव नहीं हो पाता। ऐसा तब होता है जब एक सशक्त समूह अपने को असहमत दृष्टिकोण से अलग कर लेता है। एक निर्देशक नेता की उपस्थिति, जो यह संकेत देता है कि वह किस तरह के दृष्टिकोण को समर्थन देता/देती है, भी इसमें सहयोग करती है। समूह चिन्तन परिदृश्य, अभेद्यता, समूह नैतिकता में अटूट विश्वास, तार्किकता और अनुरूपता के दबाव के कारण घटित होता है।

पाठगत प्रश्न 13.6

1. समूह के कार्य को प्रभावित करने वाले घटकों का वर्णन करें?

2. समूह ध्रुवीकरण के हानिकारक प्रभावों का वर्णन करें?

समूह अलग–अलग तरह के होते हैं। मुख्य रूप से, समूहों को औपचारिक और अनौपचारिक समूह के रूप में बांटा गया है:–

13.5 औपचारिक व अनौपचारिक समूह

समूह जो किसी उद्देश्य के लिए बनाए गए हों, औपचारिक समूह कहलाते हैं। इस तरह के समूह विशेष रूप से किसी निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु ही बनते हैं। विद्यार्थियों के शोध कार्य के समूह, समिति या आयोग यह सभी औपचारिक समूह हैं।

वहीं दूसरी ओर अनौपचारिक समूह, अपने आप लोगों की आपसी बातचीत द्वारा बनते हैं। अनौपचारिक समूह, औपचारिक समूह में से ही उभरते हैं, जिसमें सदस्यों की एक जैसी राय, मूल्य, विश्वास व सामाजिक जरूरतें होती हैं। उदाहरण के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, रोटरी क्लब, छोटे अनौपचारिक समूहों की तरह इनकी शुरूआत हुई थी लेकिन समय के साथ यह औपचारिक समूह बन गए। एक ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लोगों के बीच होने वाली सहज बातचीत के कारण ही अनौपचारिक समूहों का निर्माण होता है। किसी भी समूह की सदस्यता अलग–अलग बातों पर निर्भर करती है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण घटक हैं– महत्व, साझा लक्ष्य, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक आकांक्षा, वंचन व नौकरी की सुरक्षा। एक जैसी मनोवृति व बाहरी घटकों की स्थिति तथा नेतृत्व यह कुछ विशेषतायें भी समूह के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

13.6 समूह का विकास

नए समूहों के व्यवहार व पुराने समूहों (जो कुछ समय से साथ) के व्यवहार में अन्तर होता है क्योंकि समूह बदलाव की विभिन्न अवस्थाओं द्वारा विकास कर रहा होता है। एक समूह निम्नलिखित अवस्थाओं द्वारा विकसित होता है। गठन, गहनचर्चा, आन्तरिक समन्वय और निष्पादन आदि।

गठन की अवस्था

जब भी कोई समूह बनता है तब बहुत से मुद्दों पर निर्णय लिया जाता है। समूह के सभी सदस्य विभिन्न प्रश्न पूछते हैं, जैसे कौन इस समूह का सदस्य बन सकता है? समूह के सदस्य की क्या भूमिका होगी? समूह मुझे क्या देगा? किस तरह मैं समूह में अपनी भागीदारी कर सकता हूँ? पहली अवस्था में समूह, सदस्यों के प्रति अपने व्यवहार का वर्णन करता है और समूह के लक्ष्यों का निर्धारण करता है।

गहन चर्चा की अवस्था

इस अवस्था में सदस्य अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं। व्यवहार व जरूरतों में भिन्नता इस अवस्था में सबसे अधिक देखी जाती है। आन्तरिक व बाह्य मांगें सदस्यों के बीच मतभेद उत्पन्न करती हैं, अगर इन मतभेदों को अनदेखा किया जाए तो सदस्यो के बीच कटुता उत्पन्न होती है जो कि निष्पादन क्षमता को हानि पहुंचाती है।

प्रारम्भिक एकीकरण की अवस्था

इस अवस्था में आन्तरिक निकटता और सम्बन्ध विकसित किये जाते हैं, जिसके अनुसार ही समूह के सदस्यों को आगे बढ़ना होता है। इस चरण में समूह के सदस्य एक दूसरे के साथ सहयोग करना आरम्भ कर देते हैं।

निष्पादन अवस्था

इस चरण में समूह एक प्रभावी इकाई के रूप में कार्य करना शुरू कर देता है। इस अवस्था तक समूह के सदस्य एक दूसरे के साथ रहना सीख जाते हैं। अब तक समूह के सदस्यों की भूमिका व नेतृत्व के विषयों का निर्णय ले लिया जाता है। समूह अपने लक्ष्य को हासिल करने की शुरूआत कर देता है। इस अवस्था में अधिकतर सदस्य समूह से संतुष्ट होते हैं।

पाठगत प्रश्न 13.7

1. समूह के विकास की विभिन्न अवस्थाओं का विवेचन कीजिए।

13.7 नेतृत्व

अधिकतर यह कहा जाता है कि 'आज के युवा कल के नेता हैं।' जीवन के विभिन्न पहलुओं में नेता प्रसिद्ध होते हैं। मास–मीडिया के जरिये हमारे सामने खेल, राजनीति, सिनेमा और व्यवसाय के दिग्गजो की तस्वीरें सामने लायी जाती हैं। एक सफल नेता के पीछे कई कहानियां जुड़ी होती हैं और सफल नेता बनने के लिए कोई एक विशेषता काफी नहीं होती। सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराएं, राजनीतिक–आर्थिक स्थितियाँ, नेतृत्व के कुछ महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। परिवार, व्यवसाय, विद्यालय, देश व सेना में सफलता आदि नेतृत्व की विशेषता को प्रभावित करते हैं। आज कम्प्यूटर व इंटरनेट के द्वारा काम करने में राष्ट्रीय व भौगोलिक रेखाएं मिट गयी हैं जिससे वैश्विक स्तर पर नेतृत्व की मांग बढ़ी है। नेतृत्व का अर्थ है दूसरों को निश्चित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना। एक अच्छा नेता अपने समर्थकों के व्यवहार, विशेषताओं व प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है।

13.8 अच्छे नेता के गुण

जिस तरह गांधीजी सामाजिक नेता के उदाहरण हैं, उसी प्रकार नारायणमूर्ति व्यावसायिक नेता के, तथा बुद्ध, यिशु, गुरुनानक धार्मिक नेता के उदाहरण हैं। प्रभुत्व व प्रभाव नेतृत्व प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण हैं। नेताओं को अधिकतर लोगों द्वारा सुना व स्वीकार किया जाता है।

किसी भी सफल नेता के गुण स्थान, संस्कृति व स्थिति क अनुसार अलग–अलग होते हैं। हर कार्यक्षेत्र के अपने–अपने नेता हैं जैसे क्रिकेट में सचिन तेंदुलकर, व्यवसाय में रतन टाटा, लेकिन उन्हें जनता का नेता नहीं कहा जाता है। किसी विशेष कार्यक्षत्र में नेतृत्व होना व जनता में सामाजिक नेतृत्व दोनों में अन्तर है। किसी भी नेता की मनोवैज्ञानिक विशेषताएं इस प्रकार होती हैं–

- वह अपने समर्थकों की क्षमताओं को जानते हैं।
- मौखिक व अमौखिक दोनों तरह के अच्छे संवाद करने में सक्षम होते हैं।
- अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को स्वीकार करते हैं और समूह के सदस्यों के लिए एक उदाहरण बनते हैं।
- इनमें स्थिति को समझने की क्षमता होती है।
- वह अच्छे योजना बनाने वाले, सोच–विचार रखने वाले व विश्वसनीय होते हैं।

पाठगत प्रश्न 13.8

1. नेता के गुणों को पहचानें।

13.9 नेतृत्व के सिद्धान्त

नेतृत्व के बहुत से सिद्धान्त हैं, उनमें से महत्वपूर्ण निम्नांकित हैं:

प्राचीन दृष्टिकोण यह बताता है कि नेता जन्मजात होते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार कुछ लोग नेतृत्व के गुणों के साथ ही जन्म लेते हैं और उन्हीं को नेता बनने का जन्मजात अधिकार होता है।

क. गुण सम्बन्धी सिद्धान्त

यह सिद्धान्त यह बताता है कि कौन सी व्यक्तिगत विशेषतायें प्रभावी नेतृत्व की ओर ले जाती हैं। आत्मविश्वास, दूसरो के विचारों का सम्मान, नौकरी के प्रति भावावेश तथा दूसरों के लिए एक उदाहरण बन पाने की क्षमता, लोगों के प्रति प्रेम, स्वीकृति, परिपक्वता, जिम्मेदारी और लक्ष्य हासिल करने की तीव्र इच्छा आदि नेतृत्व की कुछ अन्य विशेषतायें हैं।

ख. व्यवहारपरक सिद्धान्त

ऐसा देखा गया है कि सफल नेता का व्यवहार दो तरह का होता है– कार्य–केन्द्रित और कर्मचारी केन्द्रित। कार्य प्रबोधन काम के गुण एवं मात्रा से संबंधित होता है, वहीं दूसरी ओर कर्मचारी केन्द्रित प्रबोधन समूह के सदस्यों की निजी जरूरतों को पूरा करने की ओर ध्यान देता है।

ग. परिस्थितिजन्य सिद्धान्त

हम अक्सर यह देखते हैं कि प्रभावी नेतृत्व में परिस्थितिजन्य परिवर्त्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नेतृत्व व्यवहार की विशेष शैली पर निर्भर करती है। जैसे–जैसे स्थितियां बदलती हैं अलग–अलग नेतृत्व शैली उपयुक्त बन जाती है।

घ. लक्ष्य सिद्धांत

लक्ष्य सिद्धान्त यह केन्द्रित करता है कि किस प्रकार नेता अपने अनुयायियों की उम्मीदों को प्रभावित करते हैं। इसके अनुसार नेता का व्यवहार अनुयायी के लिए तब स्वीकार्य होता है जब उन्हें यह लगे कि उससे उनकी उम्मीदें या भविष्य में होने वाली इच्छाओं की पूर्ति हो रही है।

लक्ष्य सिद्धान्त द्वारा नेतृत्व की चार निम्नलिखित शैलियां मानी गयी हैं–

1. गति–दिशा शैली अनुयायी को यह बताती है कि क्या करना है और किस प्रकार करना है।
2. सहायक शैली अनुयायी के साथ अन्तर्वैयक्तिक संबंध स्थापित करने से संबंधित है।
3. सहभागिता शैली यह विश्वास रखती है कि अनुयायी की सहभागिता निर्णय लेने की गुणवत्ता को बेहतर बनाती है।
4. उपलब्धि शैली अनुयायी के लिए चुनौतीपूर्ण लक्ष्य निर्धारित करती है।

आपने क्या सीखा

- दो या दो से अधिक व्यक्ति जब अधिक समय के लिए, एक ही लक्ष्य को लेकर अन्तःक्रिया करते हैं तो वह एक समूह होते हैं। समूह हमारी व्यक्तिगत जरूरतों व उम्मीदों को पूरा करने के लिए आवश्यक होता है।
- समूह प्रक्रिया की महत्ता को उसके घटकों जैसे प्रतियोगात्मकता, संगतता और सहकारिता द्वारा समझा जा सकता है जो कार्य निष्पादन और उत्पादकता को बढ़ोत्तरी की ओर ले जाते हैं।
- ग्राम, जाति और समुदाय स्तर पर समूह व्यवहार के विभिन्न पक्षों को समझने में समूह प्रक्रियायें सहायक होती हैं।
- समूह की विविधता व ऊर्जा को मजबूत करके, संगठनात्मक स्तर पर उत्पादकता में अत्यधिक सुधार लाया जा सकता है।
- मनुष्य इतने जटिल हैं कि नेतृत्व को वर्णित करने के लिए बहुत से सिद्धान्त हैं।

- नेतृत्व का महान व्यक्ति सिद्धान्त यह बताता है कि कुछ लोग नेता बनने के लिए ही जन्म लेते हैं, लेकिन यह विचार बहुत पुराना हो गया है।
- गुण सिद्धान्त के अनुसार एक नेता बनने के लिए व्यक्ति में कुछ निश्चित शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक विशेषताएं होना आवश्यक है।
- परिस्थितिगत सिद्धान्त के अनुसार गुणों और व्यवहार को एकान्तिक न देखकर परिस्थिति के सन्दर्भ में देखना चाहिए।
- करिश्माई सिद्धान्त लक्ष्य प्राप्ति के लिये दूर दृष्टि पहुँच और अपारम्पारिक विधियों का प्रयोग सुझाता है।
- नेतृत्व हमारे नित्यप्रति जीवन में भी सबसे अधिक चर्चित विषय है और इस विषय की अच्छी समझ हमारे व्यावहारिक और व्यावसायिक जीवन के लिये अधिक उपयोगी होती है।

पाठांत प्रश्न

1. किसी भी समूह का सदस्य बनने के विभिन्न लाभों का वर्णन करें।
2. समू गतिशीलता क्या है?
3. नेतृत्व की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का वर्णन करें।
4. अगर आप किसी कम्पनी के नए अध्यक्ष हैं तो आप अपने नेतृत्व का प्रदर्शन किस प्रकार करेंगे?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

1. जरूरतों की संतुष्टि, पहचान, सानिध्य, आत्म एवं व्यक्तित्व का विकास, सामाजिकता, अनुशासन, लक्ष्य की प्राप्ति।

13.2

1. क. नहीं

   ख. हां

   ग. नहीं

घ. हां

च. हां

2. एक साथ कार्य करना, समान लक्ष्य, समान विशेषताओं में भागीदारी, 'हम' की भावना, बार–बार बातचीत, नियम आदि।

13.3

1. एक–दूसरे को प्रभावित करना, सामंजस्य, समानुरूपता व समूह गतिशीलता के उत्पाद
2. सामंजस्य लोगों को बांधता है, एक जैसा भय।

   सहमति, व्यवहार में बदलाव, आदेश या नियंत्रण

13.4

1. आन्तरिक समूह, बाह्य समूह, सामाजिक विभाजन, विद्वेष, भेद भाव, स्तरीकरण

13.5

1. दर्शकों की प्रस्तुति से प्रदर्शन पर प्रभाव, जागृति
2. विकीर्ण उत्तरदायित्व, कम प्रयत्न, प्रयत्नों को मूल्यांकित या पुरस्कृत किया जाना

13.6

1. समूह का आकार, समूह ध्रुवीकरण, समूह चिन्तन

13.7

1. गठन, एकीकरण, प्रदर्शन

13.8

1. प्रयास, शासकीय, संचार, समझदारी, दृष्टा, योजना

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. खण्ड 13.1 देखें।
2. खण्ड 13.3 देखें।
3. खण्ड 13.8 देखें।
4. खण्ड 13.9 देखें।